प्राचीन राजव्यवस्था एवं राजनीतिक विकास

कक्षा 6 सामाजिक विज्ञान

Complete Study Notes

सीखने के उद्देश्य

समझें कि छोटे-छोटे जनपद कैसे शक्तिशाली महाजनपद, गणराज्य और विशाल साम्राज्यों में विकसित हुए [cite: 70]। मगध के उदय, वज्जि गणराज्य, मौर्य साम्राज्य, सम्राट अशोक की धम्म नीति, गुप्त साम्राज्य, हर्षवर्धन तथा दक्षिण भारत के प्रमुख राजवंशों का अध्ययन करें [cite: 70]। साथ ही जानें कि अभिलेखों, सिक्कों और पुरातात्विक प्रमाणों की सहायता से इतिहासकार प्राचीन भारत के राजनीतिक इतिहास का पुनर्निर्माण कैसे करते हैं [cite: 70]।

प्राचीन राजव्यवस्था का परिचय

कृषि, व्यापार और स्थायी बस्तियों के विकास के साथ भारत में राजनीतिक संगठन भी मजबूत होने लगे [cite: 70]। प्रारंभिक कबीलों के मुखिया धीरे-धीरे शक्तिशाली राजा बने और छोटे-छोटे जनपद विकसित होकर बड़े राज्यों का रूप लेने लगे [cite: 70]। इन राज्यों में प्रशासन, कर व्यवस्था, सेना और राजधानी जैसी व्यवस्थाएँ विकसित हुईं [cite: 70]।

समय के साथ कुछ राज्य अत्यंत शक्तिशाली बन गए और उन्होंने विशाल साम्राज्यों की स्थापना की [cite: 70]। वहीं कुछ क्षेत्रों में गणराज्य जैसी लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ भी विकसित हुईं, जहाँ महत्वपूर्ण निर्णय सामूहिक रूप से लिए जाते थे [cite: 70]। इन राजनीतिक परिवर्तनों ने भारतीय इतिहास और शासन व्यवस्था की मजबूत नींव रखी [cite: 70]।

जनपद और महाजनपदों का उदय

लगभग 600 ईसा पूर्व अनेक छोटे जनपद विकसित होकर सोलह महाजनपदों में बदल गए [cite: 70]। कृषि, व्यापार और जनसंख्या बढ़ने के कारण इन राज्यों की आर्थिक और सैन्य शक्ति भी बढ़ती गई [cite: 70]।

राजा अपनी शक्ति और अधिकार को स्थापित करने के लिए अश्वमेध यज्ञ जैसे भव्य अनुष्ठान करवाते थे [cite: 70]। राजधानी नगरों के चारों ओर ऊँची और मजबूत किलेबंदी बनाई जाती थी ताकि शत्रुओं के आक्रमण से सुरक्षा मिल सके तथा राज्य की समृद्धि का प्रदर्शन भी हो [cite: 70]।

राज्य के संचालन के लिए व्यवस्थित कर व्यवस्था विकसित हुई [cite: 70]। किसानों से उपज का लगभग छठा भाग (भाग) कर के रूप में लिया जाता था [cite: 70]। इस कर का उपयोग सेना, प्रशासन, सड़क निर्माण तथा अन्य सार्वजनिक कार्यों के लिए किया जाता था [cite: 70]।

मगध का उदय

सभी महाजनपदों में मगध सबसे शक्तिशाली राज्य बनकर उभरा [cite: 70]। इसकी सफलता के पीछे अनेक भौगोलिक तथा आर्थिक कारण थे [cite: 70]।

गंगा और सोन नदियों ने उपजाऊ भूमि, जल तथा व्यापार के सुविधाजनक मार्ग उपलब्ध कराए [cite: 70]। घने जंगलों से हाथी प्राप्त होते थे, जो सेना की शक्ति बढ़ाते थे [cite: 70]। झारखंड क्षेत्र के लौह अयस्क से मजबूत हथियार और कृषि उपकरण बनाए जाते थे [cite: 70]। सशक्त शासकों और प्रभावी प्रशासन के कारण मगध लगातार विस्तार करता गया और आगे चलकर इसी क्षेत्र से भारत के प्रथम विशाल साम्राज्य—मौर्य साम्राज्य—का उदय हुआ [cite: 70]।

वज्जि गणराज्य

मगध जहाँ राजतंत्र था, वहीं वज्जि संघ एक गणराज्य था [cite: 70]। यहाँ शासन किसी एक राजा के हाथ में नहीं था, बल्कि विभिन्न कुलों के प्रतिनिधि सभा में बैठकर विचार-विमर्श के बाद सामूहिक रूप से निर्णय लेते थे [cite: 70]। यह व्यवस्था सहयोग, समान भागीदारी और लोकतांत्रिक परंपराओं का उत्कृष्ट उदाहरण थी [cite: 70]। संगठित प्रशासन और एकता के कारण वज्जि गणराज्य लंबे समय तक स्वतंत्र बना रहा [cite: 70]।

मौर्य साम्राज्य

चंद्रगुप्त मौर्य और उनके गुरु चाणक्य ने मिलकर भारत के प्रथम विशाल साम्राज्य की स्थापना की [cite: 70]। उन्होंने नंद शासकों को पराजित कर एक संगठित और शक्तिशाली साम्राज्य का निर्माण किया [cite: 70]। मौर्य प्रशासन अत्यंत व्यवस्थित था [cite: 70]। अधिकारी कर संग्रह करते थे, कानून व्यवस्था बनाए रखते थे, व्यापार को नियंत्रित करते थे तथा सड़कों और संचार व्यवस्था का विकास करते थे [cite: 70]। इस प्रभावी प्रशासन ने पूरे साम्राज्य को मजबूत बनाया [cite: 70]।

सम्राट अशोक और धम्म नीति

> **शांति का संदेश:** मौर्य साम्राज्य के सबसे प्रसिद्ध शासक सम्राट अशोक थे [cite: 70]। उनके शासनकाल में लड़ा गया कलिंग युद्ध अत्यंत विनाशकारी सिद्ध हुआ [cite: 70]। युद्ध में हुई भारी जनहानि और पीड़ा ने अशोक को गहराई से प्रभावित किया [cite: 70]। इसके बाद उन्होंने हिंसा का त्याग कर धम्म की नीति अपनाई [cite: 70]। धम्म का उद्देश्य लोगों में दया, करुणा, सत्य, धार्मिक सहिष्णुता, बड़ों का सम्मान, पशुओं के प्रति संवेदना तथा समाज में सद्भाव स्थापित करना था [cite: 70]। इन आदर्शों का प्रचार करने के लिए उन्होंने धम्म महामात्र नियुक्त किए तथा अपने संदेशों को शिलालेखों और स्तंभलेखों पर अंकित करवाया [cite: 70]।

गुप्त साम्राज्य और बाद के राज्य

मौर्य साम्राज्य के कई शताब्दियों बाद गुप्त साम्राज्य का उदय हुआ [cite: 70]। चंद्रगुप्त प्रथम और समुद्रगुप्त के शासनकाल में भारत ने राजनीतिक स्थिरता, आर्थिक समृद्धि तथा कला, साहित्य, विज्ञान और गणित के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की [cite: 70]। इसी कारण इस काल को भारत का स्वर्ण युग कहा जाता है [cite: 70]।

इसके बाद हर्षवर्धन ने कन्नौज से उत्तर भारत पर शासन किया [cite: 70]। उन्होंने शिक्षा, धर्म और संस्कृति को संरक्षण दिया तथा एक कुशल प्रशासन स्थापित किया [cite: 70]। दक्षिण भारत में पल्लव और चालुक्य जैसे शक्तिशाली राजवंशों ने शासन किया [cite: 70]। उन्होंने भव्य मंदिरों का निर्माण कराया, कला और साहित्य को बढ़ावा दिया तथा प्रशासन और स्थापत्य कला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया [cite: 75]। चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय अपनी सैन्य सफलताओं के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध थे [cite: 70]।

प्राचीन राजनीतिक इतिहास के स्रोत

इतिहासकार प्राचीन भारत के राजनीतिक इतिहास को समझने के लिए अनेक स्रोतों का उपयोग करते हैं [cite: 70]। इनमें अभिलेख, प्रशस्तियाँ, सिक्के, स्मारक, पुरातात्विक अवशेष तथा प्राचीन ग्रंथ प्रमुख हैं [cite: 70]। अभिलेख शासकों की

उपलब्धियों, प्रशासन और युद्धों की जानकारी देते हैं [cite: 70]। सिक्कों से व्यापार, अर्थव्यवस्था तथा राजसत्ता के बारे में पता चलता है [cite: 70]।

प्राचीन राजनीतिक विकास का महत्व

जनपदों से लेकर विशाल साम्राज्यों तक का विकास भारत की प्रशासनिक परंपराओं की मजबूत नींव बना [cite: 70]। कर व्यवस्था, कानून, सेना, सार्वजनिक कल्याण और शासन प्रणाली समय के साथ अधिक संगठित होती गई [cite: 70]। चंद्रगुप्त मौर्य, अशोक, समुद्रगुप्त, हर्षवर्धन तथा दक्षिण भारतीय राजवंशों के योगदान ने भारतीय इतिहास को नई दिशा दी [cite: 70]।

अभ्यास प्रश्न

1. महाजनपद क्या थे? [cite: 70]
2. मगध सबसे शक्तिशाली राज्य क्यों बना? [cite: 70]
3. मगध और वज्जि गणराज्य में क्या अंतर था? [cite: 70]
4. सम्राट अशोक को महान शासक क्यों माना जाता है? [cite: 70]
5. इतिहासकार प्राचीन राजनीतिक इतिहास का अध्ययन किन स्रोतों से करते हैं? [cite: 70]

उत्तर

- **उत्तर 1:** महाजनपद लगभग 600 ईसा पूर्व विकसित हुए सोलह बड़े और शक्तिशाली राज्य थे [cite: 70]।
- **उत्तर 2:** मगध उपजाऊ भूमि, नदियों, लौह अयस्क, हाथियों, प्राकृतिक संसाधनों तथा कुशल शासकों के कारण सबसे शक्तिशाली राज्य बना [cite: 70]।
- **उत्तर 3:** मगध में राजतंत्र था जहाँ शासन राजा के हाथ में था, जबकि वज्जि गणराज्य में निर्णय प्रतिनिधियों की सभा द्वारा सामूहिक रूप से लिए जाते थे [cite: 70]।
- **उत्तर 4:** सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद हिंसा का त्याग किया और धम्म के माध्यम से शांति, करुणा, सहिष्णुता तथा जनकल्याण का संदेश दिया [cite: 70]।
- **उत्तर 5:** इतिहासकार अभिलेखों, प्रशस्तियों, सिक्कों, स्मारकों, पुरातात्विक अवशेषों तथा प्राचीन ग्रंथों की सहायता से प्राचीन राजनीतिक इतिहास का अध्ययन करते हैं [cite: 70]।